तृतीय वर्ष, षष्ठ पत्र

व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

भाषा की परिभाषा :-

प्रकृति का यह एक विचित्र संयोग है कि जो वस्तु या व्यक्ति हमारे बहुत अधिक निकट है उसकी ओर हमारा ध्यान प्रायः नहीं जाता या बहुत ही कम जाता है। प्रत्येक मनुष्य चौबीस घंटे सांस लेता रहता है, पर उसकी ओर उसका ध्यान प्रायः नहीं जाता। ध्यान दिलाए जाने पर ही हमारी उसके विषय में विचार करने की प्रवृत्ति होती है। वास्तव में भाषा जितना हमारे निकट है हम उतना ही कम उसके बारे में विचार करने का अवसर निकाल पाते हैं।

भाषा विज्ञान में भाषा का वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन किया जाता है। भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन की प्रक्रिया में हमारे सामने पहला प्रश्न भाषा की परिभाषा के सम्बन्ध में ही आता है। प्रश्न उठता है कि भाषा क्या है? सामान्यतः इसका उत्तर है कि प्राणियों के परस्पर विचार विनिमय के साधन का नाम भाषा है। अर्थात् जिस माध्यम से हम अपने विचार एक दूसरे तक पहुँचा सके उसका नाम भाषा है। विचार से तात्पर्य यहाँ आवश्यकरूप से किसी गम्भीर समस्या से नहीं है अपितु हमारे मन, हृदय और बुद्धि की प्रत्येक उस इच्छा या भाव से है जो हम व्यक्त करना चाहते हैं। इस प्रकार से जिस-जिस विचार भाव, अथवा इच्छा को हम जिस माध्यम से दूसरे तक सफलतापूर्वक व्यक्त कर दें, उस माध्यम का नाम

IND CamScanner App

भाषा है। यदि भाषा के इस सामान्य स्वरूप पर विचार किया जाए तो ऐसे अनेक माध्यम हैं जिनकी सहायता से हम अपने विचारों आदि को अभिव्यक्त करते हैं। कई बार अपने मुँह से खांसने आदि की ध्वनि से अपने आगमन आदि की सूचना सफलतापूर्वक दे दी जाती है। घर में आए अतिथि के स्वागत अस्वागत के भाव हम अपने मूक चेहरे द्वारा ही पहुँचा दिया करते हैं।

एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में भाषा की परिभाषा इस प्रकार दी गई है- "भाषा की परिभाषा ध्वनिप्रतीकों की इस यादृच्छिक व्यवस्था के रूप में की जा सकती है जिसकी सहायता से सामाजिक वर्गों के सदस्य और संस्कृति के भागीदार के रूप में मनुष्य परस्पर सक्रिय रहते हैं और विचार प्रेक्षण करते हैं।" इस परिभाषा में निम्नलिखित तत्वों के समावेश का प्रयास किया गया है- (1) भाषा ध्वनिप्रतीकों की यादृच्छिक व्यवस्था है। (2) इसका उपयोग मनुष्यों द्वारा होता है। (3) यह विचारप्रेक्षण का साधन है। (4) यह सामाजिक व्यवहार की वस्तु है। (5) इससे सांस्कृतिक आदान प्रदान का कार्य होता है। भाषा वैज्ञानिक स्वीट ने भाषा की परिभाषा इस प्रकार दी है- "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को व्यक्त करना ही भाषा है।" यह परिभाषा प्लेटो के विचारों पर आधारित प्रतीत होती है। जिनका विचार था कि मनुष्य के ध्वन्यात्मक विचार भाषा है और अध्वन्यात्मक भाषा विचार है। ए० ए० गार्डीनर के अनुसार "प्रायः विचारों की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त स्पष्ट ध्वनि प्रतीकों को भाषा कह दिया जाता है।" अपने ग्रन्थ भाषा

IND CamScanner App

रहस्य में डॉ० श्याम सुन्दर दास का कहना है "मनुष्य मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनिसंकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।"

यदि हम इन विशेषताओं की तुलना अपने पूर्ववर्ती विचारों से करें तो भाषा के सम्बन्ध में हम अपनी पूर्ववर्ती परिभाषा को थोड़ा विस्तृत करते हुए कह सकते हैं कि "मनुष्यों द्वारा अपने ध्वनि-संकेतों की सहायता से किये जाने वाले विचारों के विनिमय के माध्यम का नाम भाषा है।

निष्कर्षस्वरूप भाषाविज्ञान में भाषा की परिभाषा इस प्रकार की जाती है- 'मनुष्य द्वारा विचार विनिमय के लिए प्रयुक्त विश्लेषण योग्य ध्वनिसंकेतों की व्यवस्था को भाषा कहा जाता है।' इति।

डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

IND CamScanner App